श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | मई - 2016 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1. शान्तिवन में आयोजित दीक्षांत समारोह में मंचासीन हैं संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी, यशवंत राव चव्हाण खुला विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. उमेश राजबब्बर, अन्नामलाई विश्वविद्यालय के योग शिक्षा के निदेशक वी. सुरेश, ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, डॉ. आर.पी. गुप्ता तथा अन्य।

2. शान्तिवन में आयोजित **RECIPE (Rajyoga Education and Consciousness Improvement Programme for Educators)** ट्रेनिंग कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी जानकी जी, ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल, ब्र.कु. शीलू बहन, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, डॉ. आर.पी. गुप्ता, ब्र.कु. सुरेन्द्रन तथा अन्य।

परामर्श दाता

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर जी
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय जी
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन जी
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग

प्रधान सम्पादक

राजयोगी डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल जी
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग

सम्पादक मण्डल

ब्र.कु. सुन्दरलाल जी, हरिनगर, दिल्ली
ब्र.कु. प्रो. एम.के. कोहली, गुड़गाँव
डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा, मेहसाना

प्रकाशक

एज्यूकेशन विंग (R.E. & R.F.)
एवं ब्रह्माकुमारीज़

प्रकाशन

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड

डिजाइनिंग सेटिंग

ब्र.कु. चुनेश
वैल्यू एज्यूकेशन ऑफिस, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- **सम्पादकीय** : दिव्य फरिश्ता : दादी जानकी जी
- सिम्पल रहकर रॉयल बनने की प्रेरणा देती है मूल्य शिक्षा
- सफलता प्राप्ति का आधार है सच्चा बनना
- मूल्यों का अविनाशी स्रोत-ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमपिता परमात्मा
- स्थापना में सभी मददगार, आयेंगे वही जो चलेंगे सदा श्रीमत पर
- मूल्य शिक्षा : ज्ञान आधारित समाज का विकास
- अनुशासित जीवन जीना सिखाता है मूल्य शिक्षा
- सम्मान समारोह
- मानव-कल्याण में आपका क्या योगदान है?
- सत्य बताने के कई रास्ते
- आराम की उम्र में नैतिक शिक्षा के प्रचार में जुटे
- कविता: विश्व वंदनीया, हे उदारमना मां...
- कविता: वो विभूति है दादी जानकी...
- नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा
- जीवन के चार अनमोल रत्न
- मूल्य शिक्षा - सफलता की ओर बढ़ते कदम
- विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां
- देश को नई दिशा देने में सक्षम है मूल्य शिक्षा
- जीवन जीने की कला सिखाता है आध्यात्मिक मूल्य
- शिक्षा प्रभाग के अभियान की सचित्र झलकियां
- रेसीपी (RECIPE) प्रशिक्षण कार्यक्रम

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि वैल्यू एज्युकेशन सेंटर, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: shikshadarpanhq@gmail.com
Mobile No.: +91 94276-38887 / +91 94140 -03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, सुखशान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय

डॉ. ब्र.कु. हरीश शुक्ल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

दिव्य फरिश्ता : दादी जानकी जी

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के 100 साल सहज रूप से स्वस्थ और निर्विघ्न पूरा करता है तो यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि प्राचीन कथाओं में सुनी हुई बातें कभी-कभी सत्य भी होती हैं। कहते हैं प्राचीन समय में ऋषि-मुनि 200 साल तक परमात्मा की याद में तपस्या करते थे। ऐसे लोग अपने जीवन को एक उद्देश्य के साथ जीते थे। कई व्यक्ति वर्षों तक व्रत, उपवास इत्यादि करते थे। अपने मन को स्थिर रखने की तपस्या करते थे। इन सभी बातों में मूल रूप से तो व्यक्ति की अपनी आंतरिक शक्ति ही है। उनका मन मजबूत होता है। किसी के भी प्रभाव में न आते हुए वह बुद्धि को परमात्मा में ही लीन रखते थे। सुनी हुई बातों पर शायद विश्वास न भी हो परंतु अनुभव की बातों पर अविश्वास नहीं किया जा सकता है। ऐसा ही एक सरल, सादगीयुक्त परंतु अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व से मेरा नाता जुड़ा है, वह है- **दादी जानकी जी,** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका।

दादी जानकी अपने आपमें एक अविरल दिव्यता का प्रतीक है। निरंतर मुख पर स्मित फैला हुआ। पास जाने पर अपनेपन की भावना की अनुभूति कराने वाली। उनके कोमल हाथों का स्पर्श जैसे अपनी सारी परेशानियों को खींचकर बाहर फेंकने वाला। हृदय मातृवत्सल। किसी एक व्यक्ति में इतने सारे गुणों का अनुभव मैंने कभी भी कहीं भी नहीं किया। एक सम्पूर्ण और सम्पन्न व्यक्तित्व जो किसी में होना चाहिए, वे सभी बातें उनमें विद्यमान हैं। आत्म-विकास की चरम सीमा तक अपने आपको पहुँचाने वाली विश्व की प्रथम व्यक्ति और वह भी महिला जो किसी उच्च पद पर कार्यरत है। परमात्मा पर अटूट विश्वास रखते हुए वह सुनाती थीं कि मेरे लिए दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण है बाबा (परमात्मा)। जब वह अपने मुख से बाबा शब्द का उच्चारण करती है तब ऐसा लगता है जैसे प्रेम की गंगा उमड़कर बह रही हो। किसी से भी मिलती है तो कहती है- मेरा भाई, मेरी बहन सुनो बाबा क्या कहता है- बस अपने को आत्मा समझो, बाबा से प्रेम करो, एक बाबा दूसरा कोई नहीं। सब मर्ज की एक दवा है- बस बाबा से योग लगाओ, योग लगाते जाओ, सब ठीक करते जाओ। प्रश्न पूछने पर एकदम सटीक उत्तर देना। सामने वाला एकदम संतुष्ट हो जाता है। किसी की पहचान कराते समय बहनें यदि लौकिक परिचय कराती तो कहती- यह तो परमात्मा के बच्चे हैं। आत्मा है। आत्मा तो निराकार है। पद क्या है? बाप के बच्चे बाप के वारिस है तो नई दुनिया में जाना है। देवी देवता बनना है। उनके मुख से ऐसी सुंदर बातें सुनकर सभी खुश हो जाते हैं, मन हल्का हो जाता है। सच ही तो है। हम दुनियावी नाम, मान, शान और पद के लिए अपनी असली पहचान खो चुके हैं। ऐसा महसूस होता है कि दादी जी हमें सदा यही याद दिला रही है। सच ही है जो निरंतर परमात्मा की याद में रहते हैं वो भला परमात्मा से दूर कैसे रह सकते हैं? परमात्म-शक्ति से शांति की अनुभूति कराने वाली, विश्व में स्थिरमना होने का गौरव दिलाने वाली, अपनी शक्तियों व गुणों से पूरे विश्व की आत्माओं में शक्ति भरने वाली, नि:स्वार्थ भाव से विश्व कल्याण की कामना रखने वाली, परमात्मा की शिक्षा से दूसरों के जीवन को सच्चे अर्थ में शिक्षित और दीक्षित करने वाली दादी जानकी जी का शतायु वर्ष समारोह मनाया गया। समारोह में उनकी उपस्थिति से भव्यता और दिव्यता का जो अनुभव हुआ उसको देखकर सभी उमंग-उत्साह से परिपूर्ण हो गये। पूरे विश्व की कई दिग्गज आत्माओं ने दादी जी को शतायु वर्ष की बधाइयाँ दीं। समाज के सभी वर्ग, क्षेत्रों के लोग दादी जी को बधाइयाँ देने आबू मुख्यालय पहुँचे। राजा, महाराजा, राजनेता, कलाकार, बिजनेसमेन, संत, धर्मनेता, शिक्षाविद् इत्यादि ने दादी जी को कोटि-कोटि बधाइयाँ दीं। 100 वर्ष प्रभु समर्पण करते हुए परमात्मा के दिव्य कार्य में, विश्व कल्याण में अर्पण करने के लिए ऐसे दिव्य फरिश्ता को शतायु वर्ष की कोटि-कोटि बधाई। शत् शत् नमन।

शिक्षा प्रभाग का एक और अनूठा प्रयास

सिम्पल रहकर रॉयल बनने की प्रेरणा देती है मूल्य शिक्षा

शान्तिवन (आबू रोड)। हमारा उद्देश्य केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि एक अच्छा इंसान भी बनाना होना चाहिए। इसके लिए मूल्यों की शिक्षा को अपनाना अति आवश्यक है। यहाँ जो शिक्षा मुझे मिली है, वही शिक्षा यदि 18 वर्ष के युवाओं को मिल जाए तो हम एक नया भारत बना सकते हैं जहाँ हर कोई सुख, शांति और आनंद से जीवन व्यतीत कर सकेगा।

उक्त उद्गार गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज़, उदयपुर के प्रिंसीपल **डॉ.एम. वेणुगोपाल** राव ने दिनांक 29 मार्च, 2016 को ब्रह्माकुमारीज़ शान्तिवन में आयोजित एमओयू कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज हम ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ एक नई दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जहाँ हमारे कॉलेज के विद्यार्थी भी आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर पाएंगे।

गीतांजली इंस्टीट्यूट के डीन रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट **राजीव माथुर** ने कहा कि जीआईटीएस, उदयपुर एवं ब्रह्माकुमारीज़ के बीच में जो एमओयू किया गया है, वह अध्यात्म और शिक्षा का संगम है। आज का युग चुनौती का युग है जो हमें मूल्य परक शिक्षा को आगे ले जाने से रोक रही है। लेकिन हमने ब्रह्माकुमारी संस्था के सहयोग से इस दिशा में कदम आगे बढ़ाएं हैं। हमने एक थॉट लैब खोलने का संकल्प लिया है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अपने संकल्पों के प्रभाव का अध्ययन कर सकेगा।

फाइनेंस कंट्रोलर **बाबूलाल जांगीर** ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य की शिक्षा को शुरू करने का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को असामाजिक गतिविधियों की तरफ बढ़ने से रोका जाए और ऐसा हम वैल्यूज़ की शिक्षा द्वारा ही कर पाएंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर की निदेशिका **ब्र.कु. डॉ. निर्मला** ने कहा कि हमारी जो प्राचीन शिक्षा की पद्धति थी उसमें स्टूडेंट का गुरु के प्रति बहुत ही सम्मान रहता था लेकिन आज की शिक्षा हमें वह संस्कार व मूल्य देने में असफल रही है। धर्म और शिक्षा को अलग कर देने के कारण ही आज हमारे देश की यह स्थिति हुई है। हमें पुन: अपने उस गौरव को प्राप्त करने के लिए मूल्य शिक्षा को अपनाना होगा। अच्छी बातें हर कोई जानता है लेकिन स्व का ज्ञान न होने के कारण वह इसे जीवन में अपना नहीं पाता है।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि मूल्य हमें सिम्पल रहकर रॉयल बनने की प्रेरणा देता है। आज कोई भी विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जिसमें अवगुणों को जीतने की शिक्षा दी जाती हो। समाज में फैली हुई बुराइयों को हम मूल्य शिक्षा को जीवन में अपनाकर ही दूर कर सकते हैं।

उदयपुर सेवाकेंद्र की संचालिका **ब्र.कु. रीटा बहन** ने कहा कि यहाँ सिर्फ वैल्यूज़ की शिक्षा ही नहीं दी जाती है बल्कि इसके साथ ही दीक्षा भी दी जाती है। जब शिक्षक स्वयं में वैल्यूज़ को धारण करेगा तो स्टूडेंट उसके वैल्यूज़ को देखकर ही ग्रहण कर लेगा।

ब्र.कु. राजेश ने कहा कि राजयोग एक ऐसी शिक्षा है जिसके द्वारा हम अपने अंदर सुख, शांति एवं आनंद की अनुभूति कर सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में आमंत्रित अतिथियों को शॉल व मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व **मधुर वाणी ग्रुप** ने 'शिक्षा की नई दिशा में आगे कदम बढ़ाए...' गीत गाकर सभी को उमंग-उत्साह व एक नई प्रेरणा से भर दिया। मंच का कुशल संचालन **ब्र.कु. मुकेश** ने किया।

सफलता प्राप्ति का आधार है सच्चा बनना

हमारी चाल-चलन साधारण मनुष्यों की तरह न हो। हमारी चलन दूसरों को प्रेरणा देने वाली हो।

भगवान मेरा पिता है, ऐसा समझने से बचपन के सुख का अनुभव होने लगता है। छोटे बच्चों को जो माँ-बाप के सुख का अनुभव होता है, वह सारी लाइफ में शक्तिशाली बना देता है। इस समय परमात्मा पिता हमारी माँ भी है। उसने हम सबके दिल के अन्दर को जान लिया है। आत्मा क्यों रो रही है, क्यों भटक रही है, क्यों अशान्त है? हम सिर्फ प्रार्थना करते और पुकारते थे कि हम दु:खी-अशांत हैं लेकिन क्यों हैं? परमात्मा माँ ने हमारे इस दु:ख को समझ लिया और कहा कि अभी तुम शान्त हो करके बैठ जाओ। बच्चे की बुद्धि कैसी होती है? बहुत इनोसेन्ट, बहुत मीठा। इस संसार में हम बाबा के बच्चों जैसा इनोसेन्ट और कोई नहीं है। हमारे जैसे भोले कहीं नहीं मिलेंगे क्योंकि हम तो कोई दुनियावी बातों को जानते ही नहीं हैं। इसलिए परमात्मा का प्यार खींचने में बड़ा आसान हो गया है। अभी दुनिया के दु:ख-अशांति को दूर करने वाले इनोसेंट माना बहुत मीठे बनो। इनोसेन्ट वह बनता है जो इतना ही समझे कि परमात्मा मुझे माँ के रूप में मिला है।

जब हमने ब्रह्मा बाबा को पहली बार देखा तो हम सेकण्ड में लाइट हो गए, जैसे देह से न्यारा। इतना अच्छा अनुभव हुआ जो हम आज दिन तक भी भूल नहीं सकते हैं। वही हमारा आधार है जो भगवान को मान करके और जान करके याद करते हैं। ब्रह्मा बाबा द्वारा ही तो उस बाप का अनुभव कर सकते हैं! ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाबा पढ़ाते हैं, यह थोड़ा डिफीकल्ट है। परन्तु आप बुद्धि नहीं चलाओ, अनुभव करके देखो। माँ के प्यार का अनुभव बच्चे को ही होता है। कोई चाची होगी तो उनसे थोड़े ही माँ के प्यार का अनुभव होगा! और अंकल से कोई बाप का अनुभव थोड़े ही होगा! लेकिन बाप, बाप होता है क्योंकि आंटी या अंकल वर्सा नहीं देते हैं।

जिसको अंदर से सच्चा होकर रहने की और सफलता पाने की लगन है वह अपना एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाता। एक व्यर्थ संकल्प भी उसके पास आ नहीं सकता। वह बहुत खुशनसीब है। जो खुशी में रहता और दूसरों को खुशी देता है वह सारे कल्प के लिए खुशी जमा कर लेता है। उनके मंदिरों में देवताओं की मूर्तियों के आगे कोई कैसा भी आता, खुशी और प्रेम लेकर जाता है। तो इतना ही यहां हमारे पास खुशी जमा हो। जो भी हमारी नज़रों के सामने आये, तो जैसे हम बाबा की नज़रों के सामने आते ही निहाल हो जाते हैं, ऐसे हमारी नज़रों के सामने आते ही अनुभव करे। यह तब होगा जब दिमाग और दिल में कुछ नहीं होगा। आत्मा के अंदर जो सत्यता और पवित्रता है वह वैल्युबुल लाइफ बनाने वाली है।

संकल्पों में यदि दृढ़ता है तो आत्मा जो चाहे पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त कर सकती है। हमारी मुस्कान रूहानियत भरी हो, सब एक-दो से मुस्कराकर मिलें तो वायुमण्डल पावरफुल बन जाता है। ज्ञान कहता है कि 'ध्यान रखो- टेन्शन नहीं अटेन्शन रखो।'

दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

सर्वोच्च परमात्मा को विभिन्न धर्म स्थापकों ने अलग-अलग नाम दिए हैं। परमात्मा पवित्रता, शान्ति, प्रेम, आनन्द, इत्यादि का सागर है। स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने से दैवी गुणों की जीवन में धारणा होती है।

मूल्यों का अविनाशी स्रोत ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमपिता परमात्मा

श्रेष्ठ मानवीय गुणों से ही जीवन मूल्यवान और महान बनता है। जीवन में श्रेष्ठ मानवीय गुणों की धारणा होने से मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर लेता है। जब मनुष्य के जीवन में इन मानवीय गुणों का अभाव हो जाता है तो जीवन दु:खी, अशान्त, तनावग्रस्त तथा यह संसार नर्क बन जाता है। जीवन में समस्याओं की उत्पत्ति का मूल कारण मूल्यों का पतन ही है।

वर्तमान समय में मूल्यों को प्रदान करने वाले प्रमुख स्रोतों में ही मूल्यों की गिरावट आ गई है। मनुष्य सबसे पहले अपने माता-पिता की गोद से ही मूल्यों की शिक्षा ग्रहण करता है। इसके बाद वह विद्यालय में शिक्षक और प्रकृति से मूल्यों को ग्रहण करता है। परन्तु माता-पिता, शिक्षक और यहाँ तक कि प्रकृति में भी इनके स्वाभाविक गुणों का ह्रास हुआ है। माता-पिता तथा शिक्षक अनेक मानवीय दुर्बलताओं के शिकार हुए हैं जिससे वे बच्चों के सामने आदर्श आचरण प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं। प्रकृति को मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए उजाड़ दिया है। व्यस्तता के कारण भी मनुष्य के पास प्रकृति से शिक्षा लेने का समय ही नहीं रहा तथा प्रकृति भी तमोप्रधान हो गई है। व्यावसायिक मानसिकता ने शिक्षा को एक बाजार में बदल दिया है जिससे ज्ञान और मानवीय मूल्यों के नाम पर केवल विभिन्न विषयों के सूचनात्मक ज्ञान से विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क को भरा जा रहा है।

विभिन्न धर्मों ने भिन्न-भिन्न मूल्यों की शिक्षा मनुष्य को प्रदान की है। इस्लाम धर्म ने भ्रातृत्व, हिन्दू धर्म ने सहिष्णुता, बौद्ध धर्म ने करूणा, सिक्ख धर्म ने विनम्रता और ईसाई धर्म ने प्रेम की शिक्षा दी। परन्तु धर्मों की शक्ति का भी ह्रास हुआ है। कई बार धर्मों में आपस में श्रेष्ठता के स्थान पर प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष की भावना भी उत्पन्न हो जाती है। वर्तमान समय में आत्मिक स्वधर्म को धारण करने के बजाय धर्म को कर्मकाण्डों के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जा रहा है। वास्तव में, धर्म आन्तरिक रूप से धारण करने की वस्तु है। धर्म के नाम पर हिंसा और आतंकवाद फैलाना सबसे बड़ा अधर्म है। इसलिए वर्तमान समय में धर्म मूल्यों के प्रभावशाली स्रोत के रूप में लोगों का मार्गदर्शन करने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं।

मूल्यों का अविनाशी स्रोत एक ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमपिता परमात्मा है। इस एक सर्वोच्च परमात्मा को ही विभिन्न धर्म स्थापकों ने विभिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न नाम दिए हैं। वह परमात्मा ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, प्रसन्नता, आनन्द, शक्तियों इत्यादि का सागर है। स्वयं को आत्मा समझकर ज्योतिर्बिन्दुस्वरुप परमात्मा को याद करने से उपर्युक्त गुणों की जीवन में धारणा होती है। इससे आनन्द, प्रेम, खुशी की प्राप्ति होती है तथा महान कर्म करने की शक्ति आ जाती है। परमात्मा पिता का सान्निध्य आत्माओं को सर्वगुण सम्पन्न बना देता है।

ब्र.कु. मृत्युंजय
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग

विशेष उपलब्धि

मूल्य शिक्षा - सफलता की ओर बढ़ते कदम

शिक्षा एक मानसिक प्रक्रिया है। वर्तमान युग को मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने मानसिक तनाव और संघर्ष की शताब्दी कहा है। इसलिए वर्तमान समय में विद्यार्थियों को शिक्षा देना सबसे महत्वपूर्ण और चुनौतिपूर्ण कार्य है।

आज कैसी शिक्षा की आवश्यकता है?

आज हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों के मन को व्यर्थ संकल्पों से मुक्त करे, सकारात्मक चिंतन करने की कला सिखाए, मन में शांति, प्रेम और एकाग्रता की शक्ति का विकास करे, विद्यार्थियों में सत्य और असत्य के अंतर को परखने की शक्ति तथा उन्हें तनावमुक्त रहने की कला सिखाए इत्यादि।

वर्तमान समय में ऐसी शिक्षा हमारे पाठ्यक्रमों से गायब है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को ज्ञान नहीं बल्कि सूचना प्रदान कर रही है। देश के उज्ज्वल भविष्य के नवनिर्माण और शिक्षा में एक नई दिशा देने के महान चुनौतिपूर्ण कार्य का समाधान है- 'मूल्य शिक्षा'। आज देश में मूल्य शिक्षा के सम्बन्ध में कोई सर्वमान्य पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में एकमत नहीं है। परन्तु ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन का शिक्षा प्रभाग सफलता की एक नई कहानी लिख रहा है। मूल्य शिक्षा के सफलता की कहानी की शुरूआत सन् 2009 से शुरू हुई जब अन्नामलाई विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग ने आपसी सहमति के आधार पर कदम बढ़ाए। शुरूआत में मूल्य शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ झिझक थी। अन्नामलाई विश्वविद्यालय के सीनेट बोर्ड की ओर से सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने मूल्य शिक्षा के मूल्यांकन की प्रस्तुति रही। इसके लिए हमने मूल्य शिक्षा के मूल्यांकन की एक नई विधि का विकास किया और वह है- 'आत्म-मूल्यांकन विधि'। यह विधि 21 सप्ताह में विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करके जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान करने में सफल होती है। इसके लिए हमारे पास असंख्य प्रमाण है और सबसे प्रामाणिक प्रमाण यह है कि कई जेलों के कैदियों का इसमें रूचि लेकर पढ़ना और उनके जीवन में आया सकारात्मक परिवर्तन।

मूल्य शिक्षा द्वारा शैक्षिक, सामाजिक, मानसिक और पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं पर हमने मूल्य शिक्षा के एम.एस.सी और एम.बी.ए. के पाठ्यक्रम में लघुशोध के कार्य को सम्मिलित किया है। इससे हमें शैक्षिक और मानसिक समस्याओं का मूल्य शिक्षा द्वारा समाधान के सम्बन्ध में नए-नए शोध निष्कर्ष प्राप्त हो रहे हैं। अभी तो मूल्य शिक्षा की सफलता की यह एकमात्र शुरूआत है। अभी तो हमें इस दिशा में बहुत आगे सफर करना है। हमारा यह विश्वास है कि 'सर्व शक्तिमान परमात्मा जब हमारे साथ है तो सफलता की कुंजी हमारे हाथ है।'

अन्नामलाई विश्वविद्यालय के साथ हमारी एक शुरूआत हुई थी। अभी वर्तमान समय में 10 विश्वविद्यालय के साथ हम मिलकर मूल्य शिक्षा का पाठ्यक्रम चला रहे हैं। अन्नामलाई विश्वविद्यालय के साथ हम 5 पाठ्यक्रम डिप्लोमा, पी.जी. डिप्लोमा, एम.एस.सी. और एम.बी.ए. कोर्स चला रहे हैं। अभी पिछले वर्ष हमने पी.जी. डिप्लोमा इन काउंसलिंग एण्ड स्प्रीच्युअल हेल्थ शुरू किया है। पी.जी. डिप्लोमा कोर्स को हम 10 भाषाओं में चला रहे हैं ताकि वैल्यू एज्यूकेशन में भाषा की समस्या के कारण कोई वंचित न रहे।

मूल्य शिक्षा की एक झलक

यशवंत राव चव्हाण ओपन यूनिवर्सिटी नासिक (महाराष्ट्र), वर्द्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी कोटा (राजस्थान), आर.के.डी.एफ. यूनिवर्सिटी भोपाल (मध्यप्रदेश), डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी डिब्रूगढ़ (आसाम), तमिलनाडू टीचर्स एज्यूकेशन यूनिवर्सिटी चेन्नई (तमिलनाडू), गणपत यूनिवर्सिटी मेहसाना (गुजरात), कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, मैसूर (कर्नाटक), असम डाउन-टाउन यूनिवर्सिटी गुवाहाटी (आसाम), यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टइंडीज, ट्रिनीडाड एण्ड टोबेगो इत्यादि यूनिवर्सिटी के साथ हम मिलकर मूल्य शिक्षा के कोर्सेज को संचालित कर रहे हैं।

कई यूनिवर्सिटीज़ हमसे मूल्य शिक्षा के कोर्स के लिए सम्पर्क कर रही है। मूल्य शिक्षा का जो एक सफर शुरू हुआ था वह एक कारवां बनकर गुजर रहा है। अभी तो हमें एक लम्बा सफर तय करना बाकी है।

डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, शान्तिवन

डॉ. ब्र.कु. ममता
मेहसाना

मूल्य शिक्षा : ज्ञान आधारित समाज का विकास

भारत विविधताओं से भरपूर समृद्ध भूमि है। किसी समाज को समृद्ध बनाने में सांस्कृतिक मान्यताओं, प्रथाओं एवं लाक्षणिकताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा में महिलाओं की भूमिका पर आज भी प्रश्नचिह्न लगे हुए हैं। पिछले 50 वर्षों से शिक्षा से सम्बन्धित अनेक पंच एवं समितियों की रचना की गई। उन्होंने जो सुझाव दिये, उस पर कितना अमल हुआ है, यह भी एक सोचने लायक बात है। आज भी महिलाओं को शिक्षित करने में हमारा समाज विश्व में शायद पिछड़ा हुआ होगा। जहाँ ज्ञान की बात होती है शिक्षा उसके साथ एकरूप होती है। आज हम टेक्नोलॉजी का प्रयोग अधिक करने लग गये हैं। परन्तु टेकनोलॉजी और ज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार में कहाँ तक है? ज्ञान को जीवन में धारण करना और दूसरों को कराना- यह मूलत: शिक्षा का उद्देश्य है।

यदि ज्ञान केवल जानकारी बनकर ही रह जाए और उसमें से विवेक पैदा न हो तो मानव जाति के पास अपना अस्तित्व बचाने का कोई मार्ग नहीं रह जाता है। हम जानते और समझते भी हैं कि सम्पूर्ण मानव जाति का भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। प्राचीन समय में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित हुई है। आज हम भविष्य की पीढ़ी को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए मानव जाति की शाश्वत एकता के मूल्यों की आवश्यकता को महसूस करते हैं। भारतीय मूल में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है परन्तु इतिहास साक्षी है कि जो ज्ञान हमारे पूर्वजों ने हमें दिया उसका प्रयोग हमने विश्व को नकारात्मक बनाने के लिए अधिक किया है। इसका कारण बढ़ती हुई भौतिकता है। मुझे क्या बनना है, से अधिक मूल्यवान यह है कि मुझे एक अच्छा इंसान बनना है। शिक्षक निर्दोष बच्चे को चरित्रवान बनाने की नींव डालता है। छात्र को मानवता से दिव्यता की ओर आगे बढ़ाता है। यदि यह उद्देश्य हासिल कर लिया जाए तो सम्पूर्ण विश्व में सत्य, अहिंसा और शान्ति के मूल्यों का शासन समग्र विश्व में प्रस्थापित हो जाएगा। प्रेम और भाईचारे की खुशबू चारों तरफ फैल जाएगी।

वर्तमान समय मूल्यों को सबसे अधिक प्रभावित वैश्विक भौतिकवाद ने किया है। इसी कारण से शैक्षिक व्यवस्था और शिक्षक दोनों के मूल्य बदल गए हैं। हमें मानव जाति के अस्तित्व पर जोखिम बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। फिर भी हम उसकी अवहेलना किए जा रहे हैं। महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि पृथ्वी के पास सभी की भूख मिटाने के पर्याप्त साधन है परन्तु सभी के लोभ को संतुष्ट करने की क्षमता नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि कुदरती संसाधनों का दुरुपयोग पृथ्वी को विनाश की ओर ले जा रहा है। वर्तमान समय हम पर्यावरण व पृथ्वी के बचाव के लिए अनेक सम्मेलन कर रहे हैं। परन्तु इस सम्मेलनों का कोई अर्थ नहीं है, जब तक कोई ठोस कदम न उठाये जाये। सभी मूल्यों के ह्रास की बात करते हैं। उसके लिए कुछ सुझाव भी देते हैं। परन्तु खतरा आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से बढ़ा हुआ है। इसका समाधान केवल शिक्षा से ही सम्भव है। बशर्त है कि उस शिक्षा में मूल्यों का होना अनिवार्य हो। यह बात हमारी भारतीय संस्कृति और परम्परा में भी निहित है। पाँच तत्वों की रचना के मूल में ही आध्यात्मिकता समाई हुई है। इसी आध्यात्मिकता से ही भारत विश्व गुरू के रूप में पहचाना जाता है। आध्यात्मिकता के माध्यम से ही मानव जाति और प्रकृति के सम्बन्धों को सही मायने में समझ सकते हैं।

आज एक ओर ग्लोबल वॉर्मिंग की समस्या है तो दूसरी तरफ हिंसा, कट्टरवाद और आतंकवाद की समस्या। इन समस्याओं के निराकरण के लिए भी हमें आध्यात्मिकता की ओर मुड़ना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में, यह नैतिकता के लिए एक आपातकाल है। इसका सामना विश्व का प्रत्येक देश कर रहा है।

मानवतायुक्त व्यक्तित्व का निर्माण

आज मानवीय समाज के नीति-नियम अलग होते हैं। फिर भी विविध धर्म, सम्प्रदाय और संस्कृति के लोग एक साथ काम करते हैं। 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के ट्विन टावर पर आतंकवादी हमले हुए, जहाँ 60 से अधिक देशों के अलग-अलग धर्म व संस्कृति के लोग कार्य कर रहे थे परन्तु उन्होंने उस समय मानवता का मिसाल कायम किया और कंधे से कंधा मिलाकर सेवा की जो यह साबित करता है कि मानव समाज की प्रगति में संस्कृति, धर्म, भाषा इत्यादि अवरोधक नहीं है। इसलिए शिक्षा में मानवीयता का होना आवश्यक है। हम जानते हैं जहाँ व्यवहार करना होता है वहाँ मानवीयता ही काम आती है। अंग्रेजों ने भारत में आकर विदेशी शिक्षा पद्धति से सिर्फ क्लर्क तैयार किये और स्वतंत्रता के बाद भी हमने शिक्षा पद्धति में अंग्रेजों की ही मान्य रखी जिससे न तो किसी को प्रेरणा मिलती है, न प्रोत्साहन।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है, 'शिक्षा मनुष्य में निहित सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति है।' रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को मनुष्य और संस्कृति का संगम कहा है। उन्होंने कहा है कि 'सर्वोत्तम शिक्षा केवल जानकारी ही नहीं देता परन्तु सभी जीवात्माओं के साथ संवादिता से जीना सिखाता है।'

भारतीय इतिहास और संस्कृति में प्रेरणा और प्रोत्साहन दोनों है। हमारी संस्कृति और धर्म सभी को विविधता में भी एकता का संदेश ही देते हैं। हम एक-दूसरे के धर्म, जाति, रीति-रिवाजों का खंडन नहीं करते वरन् उनसे कुछ शिक्षा ही पाते हैं। यह हमें मानवतायुक्त व्यक्तित्व का निर्माण करना सिखाते हैं। इसीलिए मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- शिक्षा। 1909 में महात्मा गाँधी जी ने 'हिंद स्वराज' नाम से पुस्तक लिखा। उसमें उन्होंने कहा कि 'जिस मनुष्य का शरीर जिसके वश में है, जिसका शरीर शान्ति एवं सरलता से सौंपा हुआ कार्य करे उसी मनुष्य ने सच्ची शिक्षा प्राप्त की हुई है। जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्याय युक्त है, जिसका मन कुदरत के कानून को स्वीकार करता है, जिसकी इन्द्रियाँ अपने वश में है, जिसके मन में शुद्ध भावनाएं हैं, जिन्हें नीच कार्यों के प्रति घृणा है, जो दूसरों को अपने जैसा ही मानते हैं वही मनुष्य सही अर्थ में शिक्षित है। वही कुदरत का श्रेष्ठ उपयोग करेगा और कुदरत भी उसी से उत्तम कार्य सम्पन्न करायेगी।'

समग्र विश्व में इस प्रकार की शिक्षा पद्धति के विकास की प्रक्रिया हो रही है। यही संस्कृति के विकास के संकेत है। डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा है कि शिक्षा की अंतिम नीपज मुक्त रचनात्मक मनुष्य होना चाहिए जो ऐतिहासिक स्थिति एवं कुदरती विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सके परन्तु आज व्यक्ति आर्थिक स्रोत पैदा करने में ही लगा हुआ है। वह कुदरत के दिए हुए खजाने का विवेक बुद्धि से उपयोग करने की क्षमता खो चुका है। पर्यावरण प्रदूषण का दोहन, प्राकृतिक आपदाएं, हिंसा इत्यादि मानवीय अविवेक का परिणाम है। यदि हमें परिवर्तन लाना है तो शिक्षा ही उत्तम माध्यम है। शिक्षा में आमूल परिवर्तन होना जरूरी है। भारत देश समग्र विश्व का आध्यात्मिक नेतृत्व कर रहा है। इसीलिए भारत से ही प्रारम्भ होना चाहिए। हम सभी यह समझें कि यह मेरा कर्तव्य है। एक-दूसरे को सोचने के लिए प्रेरित करे कि मैंने अपने लिए क्या किया? परिवार, समाज और देश के लिए क्या किया? इसी तरह से व्यक्तिगत सुधार हो सकता है। उसके लिए कुछ योजनाएं बनाना आवश्यक है। यह योजनाएं कैसी हों? कौन उत्तरदायित्व लें? इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक सोचने का कार्य वही कर सकता है जो मानवीय मूल्यों का संवर्द्धन करें। ऐसी संस्था है- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।

विश्व विद्यालय की योजनाएं

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ज्ञान द्वारा सामाजिक विकास के लिए कई योजनाएं बनाई गई और उसका प्रयोग भी किया गया। उच्च शिक्षा के लिए मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम बनाये गये और विभिन्न विश्व विद्यालयों में इसे लागू किया गया। 'मन को स्वच्छ एवं धरती को हरा-भरा बनाये' जैसा अभियान पर्यावरण के लिए लागू किया गया है। युवाओं के लिए 'स्वच्छ, स्वस्थ, स्वर्णिम भारत' योजना। महिला सशक्तिकरण कार्ययोजना में 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ', कुरिवाजों के प्रति जागृति इत्यादि कार्यक्रम। गाँव को गोकुल बनाना, शाश्वत यौगिक खेती के प्रयोग, व्यसनमुक्ति इत्यादि विभिन्न योजनाएं लागू की गई है। विश्व में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करने के लिए 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' बनाई गई। इस प्रकार समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से समाज के विकास के लिए संस्था द्वारा विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। इसी आशा से भारत की भूमि को फिर से स्वर्ग समान सुखमय बनाना, प्रत्येक मनुष्य को मूल्यवान बनाकर देवत्व की कोटि तक पहुँचाने का कार्य इस विश्व विद्यालय की शिक्षाओं के द्वारा किया जा रहा है। यह इसीलिए भी सम्भव है क्योंकि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय मूल्य सिखाये जाते हैं जिससे चरित्र श्रेष्ठ बने, एकत्व पैदा हो, समानता के मूल्य पनपे और बिना किसी भेदभाव के सबका विकास हो।

शिक्षा की असली ताकत शिक्षक है जो अपनी भूमिका को समझता है। शिक्षक ही राष्ट्र निर्माण के लिए भावी पीढ़ी को तैयार करता है।

अनुशासित जीवन जीना सिखाती है मूल्य शिक्षा

शान्तिवन (आबू रोड)। मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण मूल्य शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों से मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रमों में युवाओं का रूझान तेजी से बढ़ा है। यही वजह है कि देश के कई हिस्सों में इतनी बड़ी संख्या में छात्र उत्तीर्ण हो रहे हैं जो बदलते हुए समय का शुभ संकेत है। उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की मुख्य प्रशासिका **दादी जानकी जी** ने व्यक्त किए।

शिक्षा प्रभाग के साथ चार विश्वविद्यालयों ने मिलकर दिनांक 18 मार्च, 2016 को शांतिवन परिसर में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया।

यशवंत राव चव्हाण खुला विश्वविद्यालय, नासिक के निदेशक **डॉ. उमेश राजबब्बर** ने कहा कि इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है जब चार विभिन्न विश्वविद्यालयों के गणमान्य अतिथि एक ही मंच पर मंचासीन होकर अपने विद्यार्थियों के दीक्षांत समारोह का उत्सव मना रहे हैं।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के योग शिक्षा के निदेशक **वी. सुरेश** ने कहा कि आज हमने स्वचालित मिसाइल तो बना ली है परंतु अपने स्वयं के मन को ठीक दिशा में चला पाने में असमर्थ हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम जीवन में मूल्यों के द्वारा अपने मन को सही दिशा में चलाना सीखें।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष **ब्र.कु. मृत्युंजय** ने कहा कि ज्ञान, कर्तव्य, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक सामंजस्य शिक्षा के चार आधार स्तम्भ हैं। आधुनिक शिक्षा के इस युग में हम ज्ञान और कर्तव्यों की शिक्षा तो दे रहे हैं परन्तु बाकी दो स्तंभों के अभाव में हमारी शिक्षा छात्रों को जीवन मूल्य सीखा पाने में असमर्थ हो रही है।

इस कार्यक्रम में अन्नामलाई विश्वविद्यालय, यशवंत राव चव्हाण खुला विश्वविद्यालय, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय तथा गणपत विश्वविद्यालय के अनेक पदाधिकारीगण उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह में चारों विश्वविद्यालयों के उत्तीर्ण 400 शिक्षार्थियों को डिग्री तथा मेडल देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् शान्तिवन के **मधुर वाणी ग्रुप** ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का सफल संचालन **ब्र.कु. शिविका** ने किया। दीक्षांत समारोह आरम्भ होने से पूर्व सभी विद्यार्थियों ने 'मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता' का संदेश देने के लिए एक भव्य रैली निकाली।

यह मूल्य शिक्षा कार्यक्रम पूरे भारत में 10 भाषाओं में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संचालित किए जा रहे हैं। मूल्य आधारित शिक्षा से अभी तक लगभग 16 हजार से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

आज की शिक्षा प्रणाली में मूल्यों को लागू करने से ही युवाओं को मूल्यों के लिए प्रेरित किया जा सकता है। मूल्यों के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। मूल्य शिक्षा व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का विकास कर उसे अनुशासित जीवन जीना सिखाती है।

सम्मान समारोह

शान्तिवन (आबू रोड)। शिक्षा प्रभाग द्वारा 18 मार्च, 2016 को सायं 6 बजे कॉन्फ्रेंस हॉल, शान्तिवन में शिक्षा प्रभाग की सेवाओं में अपनी बहुमूल्य भूमिका निभाने वाले लगभग 100 भाई-बहनों का सम्मान समारोह रखा गया। इस अवसर पर ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, डॉ. हरीश शुक्ल, डॉ. आर.पी. गुप्ता इत्यादि उपस्थित थे।

मानव-कल्याण में आपका क्या योगदान है?

हम सभी जानते हैं कि मानव का कल्याण करने के लिए श्रेष्ठ कर्म का होना जरूरी है। कर्म और संस्कार का सम्बन्ध है संकल्पों से। संस्कार हैं गुप्त संकल्प, सुख-दु:ख का सम्बन्ध है कर्मों से। विचार अथवा संकल्प के बारे में समझना जरूरी है। विचार में तीन चीजें शामिल हैं:

1. इच्छायें
2. स्मृतियाँ
3. संवेग

वैसे कई प्रकार के थॉट्स हैं परन्तु यहाँ हमारा सम्बन्ध उपर्युक्त तीन से है।

स्वयं ठीक होने से अर्थात् स्वयं बदलने से ही विश्व बदलेगा। इसलिए अपने विचार पहले बदलें अर्थात् ठीक हों। फिर कहा जाता है व्याख्यान से व्यवहार और आचरण श्रेष्ठ है (Example is better than perception)। जिसका जीवन ही खुली किताब के समान है वह ज्यादा कहता नहीं, उसका जीवन ही दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

हमारा कल्याण जितना होगा, उतना विश्व का कल्याण होगा और जितना विश्व का कल्याण होगा उतना हमारा। इसलिए किसी ने कहा है कि विचार पर्वतों को भी चला सकते हैं (thoughts can move mountains)। दुनिया में सबसे शक्तिशाली हैं विचार। उदाहरणार्थ, किसी ने एटम बम बनाया, किसी ने ताजमहल बनाया, तो जरूर उसे पहले विचार आया ना! परन्तु हम विश्व कल्याण में सहयोगी बनेंगे जब हम दुनिया के लिए आदर्श बनें, उदाहरण बनें। उसके लिए आदर्श और श्रेष्ठ विचार करें।

कहते हैं शब्दों की आवाज से कर्म की आवाज बहुत बलशाली होती है (action speak louder than words)। और कुछ न कर सकें तो पहले तो अपने को ठीक करें। हमारे ठीक होने से कुछ तो अन्तर पड़ेगा। हमारा नारा ही है - बनो महान, करो कल्याण (Be good, Do good), हमारा अच्छा बनना ही विश्व कल्याण के लिए योगदान है, सहयोग देना है। यह योगदान का प्रारम्भ है। प्रारम्भ, प्रक्रिया और पराकाष्ठा - योगदान की ये तीन अवस्था है।

प्रक्रिया अर्थात् जितना हम परिवर्तन होंगे उतना दूसरों का भी मार्गप्रदर्शन करेंगे। फिर वे भी ऐसे करने लगेंगे तो ये प्रक्रिया शुरू होगी जो विश्वव्यापी हो जाएगी। फिर इसकी प्रगति होते-होते पराकाष्ठा हो जाएगी और नई सृष्टि आ जाएगी।

हमारे संकल्पों में परिवर्तन तब होगा जब हमारा उस कल्याणकारी निराकार परमात्मा से सम्बन्ध होगा। फिर हम विषय-वासना-वैभवों के पीछे न भागेंगे। परमात्मा की याद से निर्णय भी ठीक होगा क्योंकि वह बुद्धिमानों का बुद्धिमान है। प्रेम हमारा पवित्र हो जाएगा क्योंकि वह परम पवित्र है। इसलिए परमात्मा को कल्याणकारी कहा गया है क्योंकि वह हमारे विचारों को बदलता है। इस प्रकार हम अपना भी कल्याण करेंगे, दूसरों का भी। यह सहयोग है। सहयोग शब्द ही 'योग' से बना है। जब तक हमारा योग न होगा, हम सहयोग न दे पाएंगे। आज दुनिया में सहयोग तो सब अपनों को दे रहे हैं परन्तु परमात्मा से योग कोई नहीं कर रहे हैं। अत: विश्व का कल्याण नहीं हो रहा है। विश्व कल्याण के लिए हमारा सहयोग अथवा योगदान तो ईश्वर पिता से योग लगाना है।

बड़ी बात को छोटी करने का साधन है ऊंची स्थिति

बाबा हम सबको एक बात बार-बार याद दिलाता है कि सुनना अर्थात् बनना। हम ज्ञान की जो भी बातें सुनते हैं वह एक-एक बात हमारे अंदर धारण होती जाए। धारण होना माना स्वरूप में लाना। हम आत्मा के गुणों का जब वर्णन करते हैं तो कहते हैं आनन्द-स्वरूप, ज्ञान-स्वरूप, प्रेम-स्वरूप... सबमें स्वरूप शब्द आता है। बाबा तो सागर है लेकिन आत्मा इन गुणों का स्वरूप है। ज्ञान और भक्ति में यही अंतर है वहां सुनते रहते हैं लेकिन देवता समान बनते नहीं है लेकिन यहां बाबा हमको कहता है कि आपको बाप समान बनना है। यह कितनी बड़ी बात है।

अगर मैं कहती हूं कि मैं तो बाबा के श्रीमत पर चलती हूँ, तो श्रीमत कहती है - हर गुण को, ज्ञान को स्वरूप में लाओ। जैसे कहानी सुनाते हैं कि तोते को कहा - गंगाराम नलके पर नहीं बैठना और वह नलके पर बैठकर ही कह रहा है - गंगाराम नलके पर नहीं बैठना। क्रोध भी कर रहे हैं, याद भी आ रहा है, बार-बार दिल को लग रहा है कि यह ठीक नहीं कर रहे हैं, फिर भी कर लेते हैं फिर पश्चाताप भी बहुत होता है। तो क्या आपको बड़ी बात को छोटा करना नहीं आता है? दुनिया के हिसाब से, कमजोरी के हिसाब से आपको यह बात बहुत बड़ी लगती है। यह तो होता ही है। वैसे जब कोई शरीर से कमजोर हो, उसको कहो कि मटका उठाओ तो बिचारा मटका तो क्या, एक लोटा भी नहीं उठा सकेगा! बहादुर को कहेंगे लोटा उठाओ तो कहेगा मेरे को तो गागर दे दो। तो कमजोरी के कारण वह बात बड़ी लगती है। तो बाबा इसकी युक्ति बताते हैं - जब भी आपको बात बड़ी लगे तो आप ऊपर, ऊंचे चले जाओ। ऊंचे कहां? ऊंचे-से ऊंचा हमारा घर परमधाम है, तो वहां चले जाओ। तो बात क्या लगेगी? जैसे प्लेन में बैठके या ऊंचे स्थान से नीचे की चीजें देखो तो नीचे की बड़ी चीज भी छोटी-सी लगती है। तो बाबा कहते हैं कि क्या तुमको बुद्धि द्वारा ऊंचा जाना नहीं आता है? हम योग में क्या सीखते हैं? योग माना अपने मन, बुद्धि को ऊपर बाबा के पास ले जाना। चाहे सूक्ष्मवतन में जाओ, चाहे मूलवतन में। सूक्ष्मवतन भी इस साकारी दुनिया से ऊंचा है। लेकिन किसी को सूक्ष्मवतन या मूलवतन में जाना नहीं आता है तो कम से कम संगमयुग पर जो ऊंचा भाग्य मिला है, वह तो याद आ सकता है।

दादी हृदय मोहिनी जी

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मिसाल: 70 वर्ष की उम्र में एमएससी की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया

आराम की उम्र में नैतिक शिक्षा के प्रचार में जुटे

कहा जाता है कि उम्र के आखिरी पड़ाव में व्यक्ति वानप्रस्थी हो जाता है। यहाँ तक कि उसे घर चलाने की जिम्मेवारी से भी मुक्त कर दिया जाता है। लेकिन 70 वर्ष के शिवस्वरुप ने इन सभी बातों को दरकिनार करते हुए अध्यात्म और मूल्यपरक शिक्षा में एमएससी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। अभी वे समाज में मूल्य शिक्षा के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं जिसके तहत उन्होंने अनेक परिवारों को बिखरने से बचाया और बुजुर्गों को परिवार में सम्मान दिलाया। इतना ही नहीं उन्होंने आने वाली पीढ़ी को नि:शुल्क मूल्य शिक्षा देकर बच्चों को संस्कारित बनाने का कार्य कर रहे हैं जिससे वे अपने जीवन को मूल्यों से संवार सकें। वे बताते हैं कि उन्हें इसकी प्रेरणा ब्रह्माकुमारी संस्था के शिक्षा प्रभाग द्वारा मिली, जहाँ उन्हें जीवन जीने का एक नया आयाम मिला।

सेवानिवृत्त होने के पश्चात् बनाया कीर्तिमान

सेवानिवृत्त होने के बाद जोया के मोहल्ला चौधरियान निवासी शिवस्वरुप सिंह ने प्रथम श्रेणी में एमएससी की परीक्षा पास कर कीर्तिमान स्थापित किया है। 31 जनवरी, 2006 को पशुधन प्रसार अधिकारी पद से सेवानिवृत्त होने के बाद वे आध्यात्मिक और मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार प्रसार में लग गए। ब्रह्माकुमारी संस्था, आबू पर्वत की स्थानीय शाखा मोहल्ला कोट से जुड़कर अध्यात्म के प्रचार में जुटे हैं। अपने आवास पर भी केंद्र का संचालन शुरू कर दिया है। उन्होंने 70 साल की उम्र में अन्नामलाई विश्वविद्यालय से एमएससी (अध्यात्म व मूल्यपरक शिक्षा) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। उन्होंने बताया कि इन दिनों समाज में मूल्यपरक शिक्षा का अभाव हो गया है। संयुक्त परिवार टूट गए हैं। आज के बच्चे मां-बाप की सेवा ही नहीं करना चाहते हैं। फ्लैट संस्कृति ने मां-बाप को बेगाना बना दिया है।

मूल्य शिक्षा द्वारा 120 परिजनों को किया संगठित

अब तक 120 से अधिक परिजनों को उनके बेटों के साथ रहने के लिए तैयार किया है। जो भी बुजुर्ग परेशान मिलता है वह उसके बच्चों से संपर्क कर उन्होंने प्रेरित करते हैं और मां-बाप को साथ रखने के लिए राजी करते हैं। स्कूल, कॉलेजों में जाकर बच्चों को नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं। उन्होंने बताया कि आज स्कूल और कॉलेजों में नैतिक व मूल्यपरक शिक्षा की प्राथमिकता पर जोर देने की आवश्यकता है।

विश्व वंदनीया, हे उदारमना मां...

विश्व वंदनीया, हे उदारमना मां !
मन गगन में बन चमक रही हो चन्द्रमा !
मना रहे शताब्दी, रोशन रहे शमा !
दे रहे बधाइयां, ये धरती-आसमां...

ओम मंडली से ये शुरू किया सफ़र
कहाँ नहीं, जहां में तुम गई किधर-किधर
वंचित न रहे कोई, रही गूंजती वाणी
सार्थक किया है नाम प्रभु विश्व कल्याणी
रही भावना कर ले मिलन प्रभु से हर आत्मा...

आदिरत्नों की सुनाती हमको कहानी
उन सबको रखती साथ याद रखती जुबानी
मीरा सी जोगन बनी, राधा सी दीवानी
जग सेवा और प्रभु प्रीत की जीवंत निशानी
जनकसुता दादी जानकी जगत की मां...

सौ वर्ष लगेंगे कथा कहने को सौ साल की
बेमिसाल दादी ने सेवा बेमिसाल की
देवी बनने की लगन थी देवी बन गई
दुआ-दया-दवा बनाके देती ही रही
आशियां आंचल बना बनी हो रहनुमा...

उतनी हो महान दादी, उतनी ही निर्मान
त्याग-तप गुणों की दादी तुम तो जैसी खान
गुणवान हो बनाती सबको आप तो गुणवान
भगवान करता है स्वयं आपका गुणगान
खुशनुमा समा ये रचे खुशनुमा जहां...

ब्र.कु. सतीश, आबू पर्वत

वो विभूति है दादी जानकी...

सम्पूर्ण मानव जाति का करने को कल्याण
पहले वो खुद को बनाया निमित्त और निर्मान।
समय, श्वांस, हर संकल्पों को सफल किया सेवा में
चाहना है ना मान-शान की तनिक उनके मन में।
हो गई है अब तो वो 100 साल की
वो विभूति है दादी जानकी।
कमाल आपकी, दादी कमाल आपकी
पर आप कहती ये तो कमाल बाबा की।

'सच्चे दिल पर साहेब राजी' सदा यही दोहराती
'साफ दिल मुराद हासिल' सदा ये गुनगुनाती।
'सफेद कपड़े जेब खाली' बेफिकर बादशाह
निष्काम सेवाभाव जिनका कोई नहीं है चाह।
'रमता योगी मस्त फ़कीर' जनक बाबा की
कथनी-करनी एकसमान मीठी दादी की।

'मैं कौन हूँ, कौन है मेरा' सुन लो उनकी बात
'मैं बाबा की बाबा मेरा' लगन लगी है दिन-रात।
प्रत्यक्ष करे रब को ना कि वो खुद को
तब तो प्यारी लगती है दादी जी सबको,
सुनती है रब की और सुनाती है रब की।

जिनको देखकर सारा जहां खुशहाल
जिनको सुनकर बदले सबकी चाल।
देश क्या विदेश के कितनों का किया कल्याण
देना ही देना यह तो दादी की पहचान,
खान है शुभ भावना-शुभकामनाओं की।

ब्र.कु. हलधर, आबू पर्वत

नैतिक मूल्य और वर्तमान शिक्षा

हर युग में बदला है शिक्षा का स्वरूप

ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा या विद्या से होती है। ऋषियों की दृष्टि में विद्या वही है जो हमें अज्ञान के बंधन से मुक्त कर दे। शिक्षा की प्रक्रिया युग के सापेक्ष होती है। युग की गति और उसके नए-नए परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा की परिभाषा और उद्देश्य के साथ ही उसका स्वरुप भी बदल जाता है। मानव के विकास के लिए खुलते नित-नए आयाम शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए चुनौती का कार्य करते हैं जिसके अनुरुप ही शिक्षा की नई परिवर्तित रूप-रेखा की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए केवल अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान का माध्यम न बनाकर शिक्षित को केवल भौतिक उत्पादन-वितरण का साधन न बनाया जाए अपितु नैतिक मूल्यों का केंद्र बनाकर अंतर्राष्ट्रीय जगत की सुख-शांति और समृद्धि को माध्यम और साधन बनाया जाए। ऐसी शिक्षा निश्चित ही कामधेनु बनकर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सुख-समृद्धि तथा शांति का संचार करने वाली होगी।

आचरण की संहिता है नैतिक मूल्य

नैतिकता का संबंध मानवीय अभिवृत्ति से है। इसलिए शिक्षा से इसका महत्वपूर्ण व अटूट संबंध है। यदि बच्चों के परिवेश में नैतिकता के तत्व पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होंगे तो परिवेश में जिन तत्वों की प्रधानता होगी वे उनके जीवन के अंग बन जाएंगे। इसीलिए कहा जाता है मूल्य पढ़ाये नहीं जाते, बल्कि अधिग्रहित किए जाते हैं। हम संक्षेप में इतना कह सकते हैं कि हम उन गुणों को नैतिक कह सकते हैं जो व्यक्ति के स्वयं के सर्वांगीण विकास और कल्याण में योगदान देने के साथ-साथ किसी अन्य के विकास और कल्याण में किसी प्रकार की बाधा न पहुंचाए। नैतिकता सद्गुणों का समन्वय मात्र नहीं है, अपितु यह एक व्यापक गुण है जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रियाकलापों पर होता है और सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है। वास्तव में नैतिक मूल्य आचरण की संहिता है। हमें इस बात को भली-भांति समझना होगा कि नैतिक मूल्य वैयक्तिक होते हैं। अपने प्रस्फुटन, उन्नयन व क्रियान्वयन से यह सामाजिक व सार्वभौमिक होता जाता है।

मूल्य ही धर्म है

आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता को इस बात से सरलता से समझा जा सकता है कि संसार के दार्शनिकों, समाज शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षा शास्त्रियों और नीति शास्त्रियों ने नैतिकता को मानव के लिए एक आवश्यक गुण माना है। नैतिक मूल्य कर्त्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरण के प्रतिमानों का समन्वित रूप है जिसके आधार पर सत्य-असत्य, अच्छा-बुरा और उचित-अनुचित का निर्णय किया जा सकता है। यह विवेक के बल से संचालित होती है। ये मानदंड ही मूल्य कहलाते हैं और भारतीय परंपरा में ये मूल्य ही धर्म कहलाता है अर्थात् धर्म उन शाश्वत मूल्यों का नाम है जो मन, वचन और कर्म की सत्य अभिव्यक्ति से ही मनुष्य, मनुष्य कहलाता है। परंतु खेद का विषय है कि हमारी शिक्षा केवल बौद्धिक विकास पर ध्यान देती है। हमारी शिक्षा शिक्षार्थियों में बोध जागृत नहीं कराती, वह जिज्ञासा नहीं जगाती जो स्वयं सत्य को खोजने के लिए प्रेरित करे और आत्मज्ञान की ओर ले जाए। सही शिक्षा वही हो सकती है जो शिक्षार्थी में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके।

जीवन मंत्र

जीवन के चार अनमोल रत्न

एक वृद्ध संत ने अपनी अंतिम घड़ी नजदीक देख अपने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा कि मैं तुम बच्चों को चार कीमती रत्न दे रहा हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इन्हें सम्भाल कर रखोगे और पूरी जिंदगी इनकी सहायता से अपना जीवन आनंदमय तथा श्रेष्ठ बनाओगे।

पहला रत्न है: क्षमा

तुम्हारे लिए कोई कुछ भी कहे, तुम उसकी बात को कभी अपने मन में न बिठाना और न ही उसके लिए कभी प्रतिकार की भावना रखना, बल्कि उसे माफ कर देना।

दूसरा रत्न है: भूल जाना

अपने द्वारा दूसरों के प्रति किए गए उपकार को भूल जाना। कभी भी दूसरों द्वारा किए गए उपकार के बदले में कुछ मिलने की उम्मीद मन में न रखना।

तीसरा रत्न है: विश्वास

हमेशा अपनी मेहनत और परमात्मा पर अटूट विश्वास रखना क्योंकि हम कुछ नहीं कर सकते जब तक उस सृष्टि नियंता के विधान में नहीं लिखा होगा। परमात्मा पर किया गया पूर्ण विश्वास ही तुम्हें जीवन के हर संकट से बचायेगा और सफलता दिलायेगा।

चौथा रत्न है: वैराग्य

हमेशा यह याद रखना कि जब हमारा जन्म हुआ है तो निश्चित ही हमें एक दिन मरना ही है। इसलिए किसी के लिए अपने मन में लोभ-मोह न रखना।

जब हम इन चार रत्नों के महत्व को समझकर कार्य-व्यवहार करते हैं तो हमारा जीवन सुख, शान्ति से परिपूर्ण होता है। परन्तु जब हम इसके विपरीत जाते हैं तभी जीवन में समस्याएं आनी शुरू हो जाती हैं। इससे यही शिक्षा मिलती है कि हमें जीवन में कभी भी किसी को दु:ख नहीं देना चाहिए, सभी प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

स्थापना में सभी मददगार
आयेंगे वही, जो चलेंगे सदा श्रीमत पर

प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर परमपिता परमात्मा सतयुगी राजधानी की स्थापना कर रहे हैं जहाँ प्रवेश वही प्राप्त कर सकते हैं जो सदा ईमानदार, वफादार और आज्ञाकारी अर्थात् पूर्ण श्रीमत पर चलने वाले होंगे।

कहा जाता है कि परमात्मा जब इस धरा पर अवतरित होते हैं तो वे एक नई दुनिया की स्थापना करते हैं जिसे सतयुग, हेवन, पैराडाइज इत्यादि नामों से अलग-अलग धर्मों में जाना जाता है। परमात्मा का यह कार्य दिव्य और अलौकिक होता है जिसमें सभी आत्माओं का सहयोग होता है। इस दिव्य और महान कार्य में जो आत्माएं सहयोगी बनती हैं उनका कई जन्मों का श्रेष्ठ भाग्य बन जाता है। यदि वे आत्माएं परमात्मा की श्रीमत प्रमाण सारा जीवन चलते रहें तो परमात्मा उन्हें श्रेष्ठ भाग्य देने के साथ ही उस दुनिया के अधिकारी भी बना देते हैं। इसे हम और भी स्पष्ट रूप से एक कहानी के माध्यम से समझ सकते हैं:

एक राजा के चार बच्चे थे। राजा ने सोचा कि क्यों न अपने बच्चों के लिए एक नया महल बनवाया जाए। उन्होंने अपने राज्य में ढिढ़ोरा पिटवा दिया कि राजा अपने बच्चों के लिए नए महल का निर्माण करना चाहते हैं। अत: जो-जो इस कार्य में सहयोग करना चाहते हैं, वे कर सकते हैं जिसके फलस्वरूप सभी को उचित धनराशि दी जाएगी। साथ ही जो महल बनाने में ईमानदार, वफादार रहेंगे और जो राजा की आज्ञा पर चलेंगे उनको उनकी योग्यता के मुताबिक राज्य कारोबार में आजीवन नौकरी दी जाएगी।

यह सूचना सुनते ही महल बनाने के लिए बहुत सारे लोग एकत्रित हो गए। राजा ने मुहूर्त निकालकर नींव खोदना प्रारंभ करा दिया और सभी लोगों को अलग-अलग विभाग दे दिए। किसी को डिजाइन बनाने की, किसी को बगीचा, किसी को चुनाई, किसी को प्लास्टर, किसी को चित्रकला, किसी को सुरक्षा, किसी को भोजन बनाने की, किसी को साफ-सफाई की, किसी को सामग्री खरीदने की, किसी को प्रचार-प्रसार करने की, किसी को पेंटिंग इत्यादि करने की। इस तरह हर प्रकार की व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेवारी दे दी। राजा प्रतिदिन सभी से मिलने के लिए जाते, काम-काज देखते, सबकी हालचाल पूछते और जिसको जिस चीज की जरूरत पड़ती थी उसको वह चीज दे दिया करते थे। इसके साथ ही वे सबकी खूब खातरी भी करते थे।

कुछ समय के बाद महल बनाने का कार्य पूर्ण हुआ। राजा ने सबको जिसकी जितनी मेहनत उसके मुताबिक धनराशि भी दे दी और नियम के मुताबिक राजा को जो व्यक्ति पसंद आया उसको अपने कारोबार में शामिल कर लिया। जो व्यक्ति पसंद नहीं आया उसको उचित धनराशि देकर वापस घर भेज दिया। महल बहुत ही सुन्दर और आकर्षक बना।

कुछ समय के पश्चात् महल बनाने वाले में से एक व्यक्ति वहां से गुजर रहा था तो सोचा कि चलो महल को देख लूं कि कैसा है। जैसे ही द्वार के पास पहुंचा तो द्वारपालों ने उसे रोक दिया और कहा कि तुम कहाँ जा रहे हो? व्यक्ति बोला- मैं महल बनाने में मददगार था तो मैं महल देखना चाहता हूँ। द्वारपाल ने कहा कि आप राजा की अनुमति के बिना अंदर प्रवेश नहीं कर सकते। यह सुनकर वह व्यक्ति निराश होकर अपने घर की ओर चला गया।

इस कहानी का सार यही है कि अभी सतयुगी राजधानी की स्थापना हो रही है तो इस स्थापना के कार्य में अनेक आत्माओं के सहयोग की जरूरत है। वर्तमान समय अनेक आत्माओं को अलग-अलग विभाग मिला हुआ है और जिसको जिस चीज की आवश्यकता होती है उसको वह चीज मिल भी जाती है। इस प्रकार समय-समय पर सबकी खातरी भी खूब होती रहती है। लेकिन जब सतयुगी राज्य की स्थापना हो जायेगी तब 'जो ईमानदार, वफादार, आज्ञाकारी और बाप की श्रीमत पर चलने वाले होंगे वह सतयुगी राज्य में शामिल कर लिए जायेंगे और जो श्रीमत पर नहीं चलेंगे, ऐसी आत्माओं को अंदर जाने नहीं दिया जाएगा।' इसलिए हमें चेक करना है कि हम सतयुगी राज्य में जाने लायक कहाँ तक बने हैं। हमारे से कोई अवज्ञा तो नहीं होती है।

लौकिक में भी हम देखते हैं कि जो मजदूर घर या महल बनाते हैं उनको तब तक अंदर आने देते हैं जब तक घर या महल बन रहा होता है। परन्तु बनने के पश्चात् यदि वह अंदर आना चाहे तो उसे मना कर देते हैं। कहने का भाव यह है कि घर या महल बनने के पश्चात् दरवाजे के बाहर लिख देते हैं, 'बिना अनुमति के प्रवेश वर्जित है।' अत: हमें परमात्मा द्वारा स्थापित सतयुगी दुनिया में आने के लिए मंसा, वाचा और कर्मणा में पूर्ण रूप से ईश्वरीय श्रीमत का पालन करना होगा।

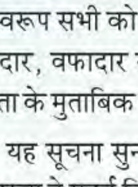

ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

शान्तिवन (राजस्थान)

शान्तिवन (राजस्थान)

कोटपुतली (राजस्थान)

मुम्बई (महाराष्ट्र)

वैंगलोर (कर्नाटक)

मऊ (उत्तर प्रदेश)

वैंगलोर (कर्नाटक)

झांसी (उत्तर प्रदेश)

विभिन्न स्थानों पर हुई शिक्षा प्रभाग की सेवाओं की झलकियां

अलेप्पी (केरल)

गुलबर्गा (कर्नाटक)

मेहसाना (गुजरात)

शान्तिवन (राजस्थान)

सोनीपत (हरियाणा)

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

चिदम्बरम् (तमिलनाडु)

भद्रक (ओड़िसा)

देश को नई दिशा देने में सक्षम है मूल्य शिक्षा

अजमेर। अजमेर शहर में आम लोगों को मूल्य आधारित शिक्षा से अवगत कराने के उद्देश्य से ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा नवाब का बेड़ा में वैल्यू एज्यूकेशन एवं रिट्रीट सेंटर का निर्माण किया गया है जिसका उद्घाटन संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, राजस्थान की महिला एवं विकास मंत्री अनिता भदेल, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय, यूरोप में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों की निदेशिका ब्र.कु. जयंति, हांगकांग के मुख्य व्यवसायी अर्जुन दास मेलवानी, प्रसिद्ध आर्किटेक्ट माधुरी यादव सहित अनेक गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

राजस्थान की महिला एवं विकास मंत्री **अनिता भदेल** ने कहा कि वर्तमान समय भौतिक शिक्षा के साथ-साथ मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है। आज की युवा पीढ़ी, मूल्य आधारित शिक्षा के अभाव में दिशाविहीन होकर अपना भविष्य अंधकारमय बनाती जा रही है। ऐसे समय में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दी जा रही मूल्य आधारित शिक्षा निश्चय ही युवाओं में सुसंस्कार भरने में अहम भूमिका निभाएगी जिससे वे देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे।

दादी रतनमोहिनी ने कहा कि परमात्मा द्वारा दी जा रही शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने से लोगों में मूल्यों का विकास हुआ है और इसके प्रति आम लोगों में जनजागृति भी आई है। मूल्य हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। यदि हमारे जीवन में मूल्य होंगे तो हमारे संस्कार भी रॉयल बनेंगे।

ब्र.कु. जयंति ने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में स्व के कल्याण के लिए कुछ समय अवश्य देना चाहिए। मूल्य शिक्षा का अर्थ ही है स्व को जानना। जो व्यक्ति स्व को जान लेता है उसके सामने दुनिया की कोई भी समस्या छोटी हो जाती है। स्व का ज्ञान ही हमें एकता के सूत्र में पिरोता है जिससे हमें पूरा विश्व ही एक परिवार अनुभव होता है।

ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि प्राचीन समय से ही भारत की पहचान विश्व गुरू के रूप में रही है। हमें पुन: उसी स्थान को प्राप्त करना है। इसके लिए हमें अपने जीवन में मूल्यों का समावेश करना होगा तथा हमारी आने वाली पीढ़ी को हमारी प्राचीन दैवी संस्कृति से अवगत कराना होगा तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी को मूल्यविहीन होने से बचा पाएंगे।

इस अवसर पर **अर्जुन दास मेलवानी, माधुरी यादव, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. शारदा** सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने सभा को संबोधित किया और कहा कि निश्चय ही यहाँ से निकला ज्ञान का प्रकाश लोगों को सत्य की ओर ले जाएगा। इस कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों के अलावा भारी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने भी भाग लिया।

जीवन जीने की कला सिखाता है आध्यात्मिक मूल्य

हमने भौतिक शिक्षा में तो बहुत प्रगति कर ली है लेकिन इसके साथ ही यह भी सत्य है कि मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा से हमारा दूसरा पहलू खाली ही रहा। यही वह शिक्षा है जो मानव मन में नैतिक मूल्यों का विकास करती है जिसके आधार से व्यक्ति घर, परिवार और समाज से जुड़ा रहता है। जब व्यक्ति का जीवन मूल्यों से संपन्न होता है तब वह दूसरों का भी जीवन मूल्यनिष्ठ बनाने की दिशा में कार्य करता है। जिस घर के सदस्य मूल्यों से संपन्न होते हैं वहां सदा ही सुख-शांति का साम्राज्य होता है। वहां आपस में लोग बहुत ही स्नेह-प्यार से रहते हुए एक-दूसरे की भावनाओं का कद्र कर पारिवारिक जीवन जीते हैं।

मूल्यों से संपन्न माता-पिता ही अपने बच्चों को श्रेष्ठ संस्कारों की शिक्षा दे पाते हैं। जब बच्चे को घर-परिवार से श्रेष्ठ संस्कार व मूल्यों की शिक्षा मिलती है तब वही बच्चा आगे चलकर माता-पिता का सहारा बनता है। ये वो मूल्य है जो देश को एक नई दिशा, एक नई सोच दे सकता है और हमारी आने वाली पीढ़ी को अपसंस्कृति के मार्ग में जाने से बचा सकता है। जीवन में कोई भी घटना घटित होने के पश्चात् यदि हमारा दृष्टिकोण पॉजीटिव रहता है तो हम बहुत सारी बातों से बच जाते हैं। सदा सकारात्मक चिंतन करने से हमारा भविष्य अच्छा हो जाता है और जीवन के प्रति हमारा नजरिया भी बदल जाता है जिससे हमारे व्यवहार श्रेष्ठ बन जाते हैं। ऐसा हम तभी कर पाएंगे जब हम जीवन में मूल्यों को समझेंगे और उन्हें अपनाएंगे।

शिक्षा प्रभाग के अभियान की सचित्र झलकियां

ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा **'मूल्यों एवं आध्यात्मिकता द्वारा स्वस्थ एवं खुशनुमा जीवन'** और **'मन को स्वच्छ और धरती को हरा-भरा बनाये'** अभियान का शुभारम्भ 6 सितम्बर, 2015 को पानीपत तथा समापन 3 नवम्बर, 2015 को जम्मू में किया गया। यह अभियान हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर में चलाया गया। इससे हजारों भाई-बहनें लाभान्वित हुए और कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कार्यक्रम हुए।

रेसीपी (RECIPE) प्रशिक्षण कार्यक्रम

शान्तिवन (आबू रोड)। दिनांक 16 से 18 मार्च, 2016 तक ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा शान्तिवन में त्रिदिवसीय RECIPE (Rajyoga Education and Consciousness Improvement Programme for Educators) ट्रेनिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से लगभग 2000 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस रेसिपी ट्रेनिंग कार्यक्रम को विद्यालयों (सेंट्रल स्कूल, नवोदय स्कूल, सरकारी स्कूल, प्राइवेट स्कूल इत्यादि), महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में तीन दिवसीय, एक सप्ताह अथवा एक महीने तक सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में आयोजित किया जा सकता है। ट्रेनिंग कार्यक्रम का सफल संचालन करने के लिए छः किताबें बनाई गई हैं। साथ ही 615 स्लाइड्स की पावर पाइण्ट्स प्रेजेण्टेशन की सीडी भी उपलब्ध है जिसका उद्घाटन संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. शीलू बहन, ब्र.कु. पांड्यामणि, डॉ. हरीश शुक्ल, डॉ. आर.पी. गुप्ता एवं रेसीपी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने आए विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

1. कोच्चि (केरल)। कोच्चि में आयोजित एज्यूकेशन कॉन्फ्रेंस में वैल्यू एज्यूकेशन के प्रोफाइल का अवलोकन कराते हुए डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. सुरेन्द्रन, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. वासन तथा अन्य। **2. नासिक (महाराष्ट्र)।** नासिक में शिक्षा प्रभाग के अभियान का दीप प्रज्ज्वलित कर लॉन्चिंग करते हुए वाईसीएमओयू के कुलपति प्रो. डॉ. मानिकराव सालुंके, अतिरिक्त कलेक्टर विवेक गायकवाड़, एन. पाटिल, ब्र.कु. वासंती, ब्र.कु. जीतू तथा ब्र.कु. सतीश।

Education Wing HQs. Office
B.K. Mruthyunjaya, Vice-Chairperson, Education Wing
Brahma kumaris, Value Education Centre
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan, **Abu Road-307510 (Raj.)**
E-mail: educationwing@bkivv.org
Education Wing, National Co-ordinators Office
B.K. Dr. Harish Shukla, National Coordinator, Education Wing
Sukh Shanti Bhawan, Kankaria, **Ahmedabad-380022 (Guj.)**
Mob. No. : +91 9427638887 **Fax :** 079-25325150
E-mail: harishshukla31@gmail.com

To,